डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा प्राचीन ग्रंथों में स्वच्छता की अवधारणा विषयक परिसंवाद संपन्न
सभी धर्मों में आंतरिक और बाह्य स्वच्छता की महत्ता है
मन का परिष्कार ही स्वच्छता है – बल्देवभाई शर्मा
अस्वच्छता और प्रदूषण वर्तमान युग की समस्या है – कपिल कपूर

नई दिल्ली। 24 अप्रैल 2018। साहित्य अकादेमी द्वारा आज ''प्राचीन ग्रंथों में स्वच्छता की अवधारणा'' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन वक्तव्य राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष बल्देवभाई शर्मा तथा अध्यक्षीय वक्तव्य भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के अध्यक्ष कपिल कपूर द्वारा दिया गया। विषय पर बोलने वाले प्रतिभागी थे – बलवीर सिंह सीचेवाल, फ़रीदा ख़ानम, वीर सागर जैन, विजय कुमार, निरंजन देव भारद्वाज। अपने उद्घाटन वक्तव्य में बल्देवभाई शर्मा ने कहा कि मन का परिष्कार ही स्वच्छता है और हमारे सभी धर्म ग्रंथों में शुचिता यानी स्वच्छता को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। धर्म के 10 लक्षणों में शुचिता भी एक है। मन, वचन और कर्म तीनों ही शुद्ध हो जाने पर जीवन स्वयं ही शुद्ध हो जाता है। उन्होंने कहा कि अपनी जड़ों, अपनी परंपराओं की ओर लौटना आज बहुत जरूरी हो गया है। आगे उन्होंने कहा कि आंतरिक शुद्धि के साथ साथ बाह्य शुद्धि भी अत्यंत आवश्यक है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष कपिल कपूर ने कहा कि तथाकथित आधुनिक विकास ने प्रकृति से हमारे संतुलन को बिगाड़ दिया है, जिसके जिम्मेदार हम स्वयं ही हैं। हमारी प्राचीन संस्कृति में विचार, आचार और व्यवहार तीनों की शुद्धता पर ज़ोर दिया गया है। लेकिन आज इनमें से कोई भी चीज़ शुद्ध नहीं रही है। आगे उन्होंने कहा कि हमारे ग्रंथों में कहा गया है कि जल हमारे शरीर को साफ करता है, ज्ञान से बुद्धि परिष्कृत होती है, अहिंसा से जीवात्मा शुद्ध होती है और हमारा मन सत्यता से शुद्ध होता है, लेकिन अब हम इन सारी चीजों को परिष्कृत करना भूल गए हैं। यह अपनी परंपराओं को भूलने जैसा है। कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि सभी धर्मों के मूल में स्वच्छता का महत्त्वपूर्ण स्थान है किंतु वर्तमान में हम मन और तन दोनों की शुद्धता का ख्याल नहीं रख पा रहे हैं। हमें स्वच्छता को अपने जीवन में व्यापक रूप से स्थान देना होगा तभी हम पृथ्वी पर मँडरा रहे इस बड़े संकट से मुक्त हो पाएँगे। संत बलवीर सिंह सीचेवाल ने गुरुग्रंथ साहिब से उदाहरण देते हुए कहा कि गुरुनानक जी 550 साल पहले भी हवा, पानी और प्रकृति को प्रदूषित न करने की चिंता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि उस समय प्रकृति से हमारे संबंध इतने मानवीय थे कि हम उसको भी जीव के रूप में मानते थे और पारिवारिक रिश्तों की तरह ही उससे निर्वाह करते थे। यह संबंध आज खत्म से हो रहे हैं जिसका परिणाम है – पर्यावरण प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग। फ़रीदा ख़ानम ने कहा कि हदीस के मुताबिक अल्लाह पाक है और पाक लोगों को ही पसंद करता है। उन्होंने कहा कि इस्लाम में सफाई अर्थात स्वच्छता ईमान का हिस्सा है। उन्होंने पवित्र कुरान से कई उदाहरण देते हुए बताया कि हमें प्रकृति से उतना ही लेना चाहिए जितने की जरूरत हो। ऐसी समझ ही पर्यावरण का संतुलन बना सकती है। वीर सागर जैन ने प्राचीन जैन धर्म ग्रंथों के हवाले से बताया कि जैन धर्म की मुख्य पहचान 'अहिंसा' भी एक तरह से स्वच्छता का ही दूसरा रूप है। जैन धर्म में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और समस्त प्रकृति को मानव रूप में मानते हुए उसकी वैसे ही सुरक्षा करने की बातें कही गई हैं जैसे हम स्वयं की सुरक्षा करते हैं। उन्होंने कहा कि जैन आचार्यों ने हमेशा पृथ्वी पर उपलब्ध सभी संसाधनों का विवेक पूर्ण उपयोग करने की शिक्षा दी है। विजय कुमार ने कहा कि भगवान बुद्ध ने आंतरिक स्वच्छता पर अधिक ध्यान दिया था

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

लेकिन बाह्य शुद्धि की भी उपेक्षा नहीं की, उनकी शिक्षाओं में आंतरिक एवं बाह्य दोनों शुद्धियों की प्रेरणा मिलती है। निरंजन देव भारद्वाज ने वेदों, उपनिषदों और स्मृति ग्रंथों से स्वच्छता के संबंध में अनेक उदाहरण देते हुए कहा कि स्वच्छता हमारे धर्म और संस्कृति का अहम हिस्सा रही हैं। आधुनिक समय में विकास की दौड़ में हम अपने प्राचीन जीवन मूल्यों को भूल गए हैं, जिसका परिणाम है – हम पर्यावरण असंतुलन और उससे पैदा हो रही मुश्किलों का सामना कर रहे हैं। कार्यक्रम के अंत में सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

(के. श्रीनिवासराव)